International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-01-2020; Accepted: 07-02-2020; Published: 05-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 16-18

किशोरो के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं **नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन**

गार्गी सिंह [1], डॉ. अल्पना वर्मा [2]
[1] शोधकर्ता गार्गी सिंह, बरकतुल्लाह विष्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देषिका डॉ. अल्पना वर्मा, एम्पल ड्रीम्स इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकशन सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारत की स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई में समाचार पत्रों का काफी योगदान रहा। एक काल ऐसा था कि पत्रकारिता ने आजादी प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण तथा आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की थी किन्तु आज हालात पूरी तरह बदले है। आज समाचार प्रसार के माध्यम सिर्फ प्रिंट मीडिया ही नहीं, अपितु इलेक्ट्रानिक मीडिया भी है, जो कि इतने तेज और प्रगत है कि पलक झपकते ही समाचार दुनिया में प्रसारित किए जा सकते है और जनमानस को प्रभावित किया जा सकता है। मीडिया के माध्यम से ज्ञान, विचार शब्दो तथा चित्रो के रूपों में दूसरो तक पहुँचाया जा सकता है। जिज्ञासा मनुष्य मात्र की मूल प्रवृत्ति है और उसे शांत करने का माध्यम मीडिया है।

मीडिया का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है आज के आधुनिक संचार माध्यमो में आकाशवाणी, दूरदर्शन, सेटेलाइट प्रसारण, वीडियो, टेलीफोन, फेक्स प्रमुख है। पत्रकारिता ने आज मनुष्य के ह्रदय में अपना स्थान बना लिया है। पत्रकारिता एक ऐसी कला है जो दूरियाँ कम करती है।

मीडिया का प्रमुख कार्य सूचना देना है, साथ ही साथ लोगो को शिक्षित करना भी हैं। ''पत्रकार जनसाधारण का गुरू होता है, क्योकि पत्रकारिता के पेशे में हमेशा ही ईमानदारी को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। जिस बात को पत्रकार देखता, सुनता और महसूस करता है, उसे मुद्रित अथवा दृश्य–श्रृव्य माध्यमो द्वारा आम जनता के बीच पहुँचाता है और आम जनता मीडिया द्वारा कही गई बातो को जल्दी ही मान लेती है।'' अतः पत्रकार का यह दायित्व होता है कि वह समाचार की सच्चाई जनता तक पहुँचाए और इस कार्य में उसका सहयोगी मीडिया होता है। हमारे देश की जनता मीडिया पर अटूट विश्वास रखती है उसे यह भरोसा होता है कि मीडिया हम तक जो पहुँचा रही है वह सत्य है वह आँख बंद कर समाचार की हकीकत जानने का अपनी ओर से कोई प्रयास नहीं करता क्योकि मीडिया पर दिखाई जाने वाली हर खबर उसे पूर्णतः सत्य लगती है वह यह मानता है कि मीडिया बिना किसी भेदभाव के निष्पक्षता के साथ सत्य को उजागर करती है इसमें उसका अपना कोई हित नहीं होता परन्तु कभी–कभी उसे ठेस भी पहुँचता है जब पता चलता है कि आर्थिक लाभ या किसी दबाव के कारण मीडिया ने अर्द्धसत्य या गलत जानकारी जन–जन तक पहुँचाई है ऐसी स्थिति में मीडिया से विश्वास डगमगाने लगता है और मीडिया अविश्वासनीय साधन बन जाते है।

मनुष्य के जीवन में मनोरंजन का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य अपना अधिकांश समय मनोरंजन के साधनो के साथ बिताता है। आलसपन, उदासी को दूर करने के लिए मनुष्य पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट का उपयोग अपने दैनिक जीवन में करता है ये सभी श्रृव्य एवं दृश्य साधन मनुष्य का मनोरंजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इन साधनों पर प्रसारित होने वाले विविध कार्यक्रमों से जैसे फिल्मी गाने, नाटक, वार्ता, परिचर्चा, कविसम्मेलन, संगोष्ठियां, गीत, गजल, कार्टून, अभिनेता–अभिनेत्रियों के साक्षात्कार, कॉमेडी शो, जासूसी कार्यक्रम जनता के बीच बहुत अधिक लोकप्रिय होते है। आज मीडिया ने शिक्षा के क्षेत्र में भी भरसक ज्ञान को उपलब्ध करवा दिया है जटिल से जटिल प्रश्नों का उत्तर मीडिया पलक झपकते ही हमारे सामने प्रस्तुत कर देते है। इन प्रश्नों का उत्तर पाकर मनुष्य आशाओं के समंदर में गोता लगाने लगता है तथा एक उज्जवल भविष्य की कामना करने लगता है। मीडिया को जब बंदीशों में बाधने का प्रयास किया जाता है तो मीडिया की स्वतंत्रता, वास्तविकता उसका प्रभुत्व ये सभी धुमिल होने लगते है। इन दबावो और बंदीशो से मीडिया में अराजकता और घुटन उत्पन्न होने लगती है। जिससे मीडिया का प्रमुख गुण व कर्तव्य सच्चाई को उजागर करना धीरे–धीरे दम घोटने लगता है। उसकी सच्चाई पर झूठ का आवरण चढ़ा दिया जाता है जिससे वास्तविकता जन–जन तक नहीं पहुँच पाती। मीडिया मनुष्य के मन, मस्तिष्क व बुद्धि पर सीधा प्रभाव डालते है इस लिए मीडिया को यह भरसक प्रयास करना चाहिए मनुष्य पर पढ़ने वाला प्रभाव उसके हित में हो। मीडिया जब दिखावे और आधुनिकता के चकाचौंध में फंस जाती है तो वह अपने वास्तविक स्वरूप को खोने लगती है और बनावटी परते ओढ़ने लगती है। इस बनावटीपन के कारण मीडिया खोखली होने लगती है वह केवल बयानबाजी और पोस्टबाजी बनकर रह जाती है।

मीडिया में विज्ञापनों का बोलबाला हो गया है मीडिया के अधिकतर हिस्सों में विज्ञापन ने अपना अधिपत्य स्थापित कर लिया है और मीडिया इन विज्ञापनों के आधिन होकर अपना अधिपत्य बचाए हुए है। विज्ञापनों का मीडिया में होना कोई गलत कार्य नहीं है परन्तु उन विज्ञापनों को बढ़ावा देना जिससे समाज में दूषित वातावरण उपस्थित हो जाए गलत है और यह कार्य मीडिया मात्र अपनी आर्थिक स्थिति को समृद्ध बनाने के लिए करती है और अपनी विश्वसनीयता खोने लगती हैं। मीडिया को हमेशा ही यह प्रयास करना चाहिए कि उस पर किसी भी प्रकार की विसंगतियाँ हावी ना हो पाए उसे जिस उद्देश्य से मीडिया अस्तित्व में आयी और जीवंत रखे।

अध्ययन का उदेश्य

सभी शोधो में किए गए कार्यो का नियोजन विशिष्ट उद्देश्यपूर्ण होता है। यह शोध भी विशिष्ट उद्देश्यों को पाने हेतू किया जा रहा है। इस शोध में मीडिया और किशोर जैसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली वर्ग को सम्मिलित किया गया है ये दोनो ही वर्ग अटूट मजबूती के साथ एक–दूसरे से जुड़े हुए है तथा एक दूसरे को प्रभावित करते है अतः इस शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है–

1. ग्रामीण व शहरी किशोर बालक एवं बालिकाओं पर मीडिया का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावो की जानकारी प्राप्त करना।
2. मीडिया के प्रति किशोर बालक एवं बालिकाओं की रूचि का पता लगाना।
3. किशोर बालक एवं बालिकाओं के जीवन में मीडिया के महत्व के बारे में पता लगाना एवं उसका उनके जीवन पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की जानकारी प्राप्त करना।
4. मीडिया के प्रति अभिभावक एवं शिक्षको के सकारात्मक सोच का पता लगाना।

वर्तमान में मीडिया में असीमित संभावनाएं है, किन्तु मीडिया अपनी अधिकांश शक्तियों का प्रयोग औद्योगिक संस्थान, और अमीर घरानो व पदासिन शक्तिशाली व्यक्ति को प्रसन्न कर अधिक धन बटोरने के लिए कर रहे है। इससे मीडिया के निष्पक्षता का गुण दिखावे की चकाचौंध से दब चुका है। आज मीडिया केवल सच्चाई के पर नहीं वरन् झूठ का आवरण ओढ़े दिखाई देती है। अगर समाचार नहीं मिलता तो स्वयं समाचार बनाए जाने लगे है।

समाचार कितना ही बड़ा हो उसे छोटा करना, छोटे को बड़ा करना, गंभीर को साधारण तथा साधारण को गंभीर बना देना आज की मीडिया का मुख्य गुण हो गया है। अपनी जरूरत के अनुसार समाचार को जन–जन तक पहुँचाना और अगर अपना हित ना हो तो समाचार को वहीं गला घोट कर दबा देना मीडिया का खेल हो गया है।

शोध का महत्व

किशोर का मन व मस्तिष्क अबोध होता है और कहा जाता है कि मन पर देखा ओर सुना हुआ अधिक प्रभाव डालते है और मीडिया के पास देखने व सुनने दोनो के ही साधन उपलब्ध है जो किशोर के मन–मस्तिष्क पर अमिट छाप छोडते है। किशोर इनसे इतने अधिक प्रभावित हो जाते है कि वह इन पर दिखाए व सूनाए जा रहे कार्यक्रमो की लय के साथ अविरल ही बहते जाते है। एक और बालक समाचार पत्र व पत्रिकाओं को पढ़कर अपने ज्ञान को बढ़ाता है क्योकि इनसे किशोरो को शिक्षा, समाज व राजनीतिक और आर्थिक तथा राष्ट्र से जुड़ी हुई सभी गतिविधियों की जानकारी मिल जाती है, वहीं दूसरी ओर वह रेडियो सुनकर टेलीविजन देखकर भी वह इन सारे ज्ञान से लाभान्वित होता है। परन्तु वर्तमान में यह पाया गया है कि मीडिया के साधनों में टेलीविजन और इंटरनेट किशोरो को अधिक प्रभावित करते है। इन दोनों ही माध्यमों को किशोरो ने अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है। अपनी अधिकतर मानसिक आवश्यकताओं की संतुष्टी के लिए किशोर इन्हीं पर निर्भर है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ किशोरो ने इन्हें अपने मनोरंजन का भी अति उत्तम साधन बना लिया है। ये दोनों ही साधन ज्ञानात्मक के साथ–साथ मनोरंजनात्मक भी है परन्तु आज औद्योगिक चकाचौंध और आर्थिक प्रतिस्पर्धा के कारण मीडिया ने भी अनुचित बातो को अपने दामन में शरण दे रखी है। मीडिया पर ऐसी बातों का प्रसारण भी किया जाता है जो किशोरो के लिए अनुपयुक्त, अनुचित और हानिकारक होती है इस आयु में किशोरो को इस तरह के ज्ञान व जानकारी की कोई आवश्यकता नहीं परन्तु किशोर इन बातों से प्रभावित अवश्य होते है अतः यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि किशोरो पर मीडिया के पढ़ने वाले प्रभाव सकारात्मक है या नकारात्मक।

शोध का सीमांकन

यद्यपि शोध कार्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत है किन्तु शोध प्रबंध में सीमा को ध्यान रखते हुए शोध कार्य का क्षेत्र सीमित किया गया है। इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए खण्डवा व सीहोर जिलो को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है। इनमें उच्चतरमाध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है तथा उन्हे शोध का आधार बनाया गया है।

सोशलमीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव :

- सकारात्मक प्रभाव – बालक के व्यवहार में वह परिवर्तन जिससे बालक, परिवार व समाज तीनो लाभान्वित हों।
- नकारात्मक प्रभाव – बालक के व्यवहार में वह परिवर्तन जिससे बालक स्वयं, परिवार व समाज तीनो को नुकसान पहुंचे।

न्यायदर्श

व्यवहारिक तथा सामाजिक विषयों में शोध कार्यो में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्य पूरा नहीं किया जा सकता। विज्ञान विषयों में न्यादर्श का प्रयोग होता है परन्तु चयन की समस्या नहीं होती, परन्तु सामाजिक विषयों में न्यादर्श के चयन की प्रमुख समस्या होती है कि किस प्रकार न्यादर्श की ईकाइयों का जनसंख्या में से चयन किया जाए जो उसका प्रतिनिधित्व कर सके सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता है तथा कभी–कभी असंभव भी होता है। न्यादर्श प्रविधि शोधकार्य को व्यवहारिक तथा समय धन–शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है। न्यादर्श के प्रयोग से शोध परिणामों को अधिक शुद्ध एवं मितव्ययी बनाया जाता है।

उपरोक्त तथ्यो को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध विषय के अध्ययन हेतु सीहोर एवं खण्डवा जिले के विद्यालयों को लिया है जिससे विद्यालय के किशोर विद्यार्थी, को सम्मिलित किया गया है।

छात्र–छात्राए			
शहरी		ग्रामीण	
बालक	बालिका	बालक	बालिका
100	100	100	100

शोध उपकरणः–किसी समस्या के समाधान के लिए तथ्यो या आंकड़ो का एकत्रीकरण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके लिए उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। इस शोध में भी शोधकर्ता द्वारा आवश्यकतानुसार उपकरणों का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है जो निम्नानुसार है –

- विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार।
- अभिभावक व शिक्षको के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार।

इन उपकरणों का निर्माण स्वयं शोधार्थी द्वारा किया जायेगा। जिसे विद्यार्थियों, अभिभावक व शिक्षको के विचारों को जानने के लिए प्रयुक्त किया जाएगा।

सांख्यिकीय विधि

इस शोध हेतु रेखीय आरेख एवं सारणीयन द्वारा आंकड़ो को प्रदर्शित किया जाना प्रस्तावित है। एवं प्रतिशत विधि द्वारा परिणाम निकाले जायेंगे।

आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव के तुलनात्मक परिणामों का विश्लेषण :

सारणी 4.01ः समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के वर्गीकरण संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	समग्र किशोरों का वर्गीकरण		
				उच्च	औसत	निम्न
छात्र	200	109.21	26.78	45	113	42
छात्राएं	200	99.52	26.38	55	102	43
कुल विद्यार्थी	400	104.32	26.11	94	228	78

सारणी में प्रदर्शित न्यादर्श में लिए गये संपूर्ण छात्र/छात्रा विद्यार्थियों के समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के वर्गीकरण संबंधी तुलनात्मक परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का ड ˆ 1σ के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। इन परिणामों से मालूम होता है कि औसत समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों वाले छात्र/छात्राओं की संख्या सर्वाधिक है। छात्रों के समूह में निम्न समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों वाले छात्रों की संख्या, उच्च समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों वाले छात्रों से अधिक है, जबकि छात्राओं के समूह में उच्च समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों वाली छात्राओं की संख्या, निम्न समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों वाली छात्राओं से अधिक है। विद्यार्थियों के समूह में उच्च व निम्न समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों वालों की संख्या एक समान है। परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि, न्यादर्श में लिए गये संपूर्ण छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों में से अधिकांश का समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों औसत एवं उससे अधिक स्तर का पाया गया।

तीनों समूहों में समग्र किशोरों के व्यक्तित्व विकास में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के वर्गीकरण में बहुत अधिक अंतर नहीं है, क्योंकि प्रत्येक में आवृत्तियों की संख्या उसी क्रम में है।

निष्कर्ष

पूर्व में प्राप्त परिणामों के आधार पर विभिन्न चरों के लिये प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार प्राप्त हुये हैं –

1. न्यादर्श में ली गई संपूर्ण छात्र–छात्राओं में से अधिकांश का आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के विभिन्न क्षेत्रों में स्तर औसत एवं उससे अधिक पाया गया।
2. न्यादर्श में लिए गये संपूर्ण विद्यार्थियों में से अधिकांश का आधुनिक युग में सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव के विभिन्न क्षेत्रों में स्तर औसत एवं उससे अधिक पाया गया।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र को समय, साधनों की सीमा और शैक्षिक स्तर आदि को देखते हुए इसे खण्डवा एवं सीहोर के स्कूल तक सीमित रखा गया है परिणामों को अधिक वस्तु पर यर्थाथता एवं व्यापकता प्रदान करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में बडे आकार के न्यादर्श के साथ शोध को सम्पूर्णता प्रदान करना है। अनुसंधान करने के बाद अनुसंधानकर्ता कुछ सुझाव देना जरूरी समझता है। जो निम्न है ।

- छात्र और छात्राओं की टेक्नालाजी का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।
- छात्र और छात्राओं की मीडिया प्रभाव का तुलनात्मकता का अध्ययन किया जाना चाहिए।
- विद्यालय से लेकर कालेज तक के सभी छात्रों के अन्दर टेक्नालाजी के लिए शिक्षकों को जागरूकता पैदा करना चाहिए। जिससे की आधुनिक युग में छात्र सोशल मीडिया का सही उपयोग समझ सके।
- छात्रों को आज आधुनिक समय में मीडिया के उपयोग और उसकी विशेषताओं के बारे में पूर्ण ज्ञान उपलब्ध किया जाना चहिए ताकि अपने अधिकारों के लिए वह लड़ सकें।

संदर्भ सूची

1. रिचर्ड लिविंग्सटन (2012), 'शिक्षा की कुछ समस्यायें', अनामिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
2. लिंक (2014 सितंबर), इंटरनेशनल मासिक जरलन इंदौर।
3. वर्मा प्रीति, श्रीवास्तव डी.एम. (1985), 'मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी', विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृ. 258
4. आज शिक्षक को सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ सशक्त बनने हेतु – व्यावसायिक विकास के साथ संचार संप्रेषण तकनीक का पूर्ण ज्ञान होना साथ ही भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुरूप शिक्षा का उचित संतुलन एवं सम्मिश्रण करना होगा। इस दिशा में ठोस एवं सार्थक प्रयास अपेक्षित हैं।